मुक्ति समाचार

मई–2026
RNI/Regd. No. 27158/75
वर्ष-53 अंक 05
मासिक मूल्य 12/-

BEARING THE FRUITS
JOHN 15:5-8
THE SALVATION ARMY
2026
INDIA NORTHERN TERRITORY

Harvest Festival

Content / विषय सूची

- **फसली त्यौहार और आत्मिक फल**
  मेजर अनिल मसीह, *लिटरेरी ऑफिसर*
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **पवित्र आत्मा द्वारा एक नई शुरुआत के लिए तैयार**
  लेफ्टिनेंट कर्नल सुरेश मसीह
  सेक्रेटरी फॉर प्रोग्राम्स
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **माँ का हृदय**
  लेफ्टिनेंट कर्नल सुनीता रॉबर्ट
  टैरिटोरियल सेक्रेटरी फॉर स्पिरिचुअल लाइफ, डेवलपमेंट, उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **परमेश्वर के हथियार**
  मेजर रॉबिन, *चर्च ग्रोथ सेक्रेटरी,*
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **माओं का दिन**
  मेजर अजीत मैसी
  पब्लिक एवं एक्युमेनिकल रिलेशन्स ऑफिसर / इमरजेंसी ऑफिसर,
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **मैं जो हूँ, सो हूँ।**
  मेजर सुमन बेन्थन
  चिमयारी कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन
- **फल देना।**
  मेजर परमजीत सलामत मसीह
  ए.डब्ल्यू.डी.ओ., उत्तराखण्ड एरिया, रूदरपुर
- **फसली त्योहार-परमेश्वर को देना।**
  लैफ्टि. अलिशा
  गुज्जा पीर कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन
- **फसली त्यौहार - परमेश्वर की वफादारी का एक उत्सव**
  कैप्टन सैमसन फ्रांसिस
  कोर कमांडिंग ऑफिसर / डी.वाई.एस.,
  कोलकाता सेंट्रल कोर, पश्चिम बंगाल डिवीजन
- **आप खाली प्याले से कुछ नहीं दे सकते।**
  कैप्टन सीमा फ्रांसिस
  कोर कमांडिंग ऑफिसर / डी.एस.डब्ल्यू.एम.,
  कोलकाता सेंट्रल कोर, पश्चिम बंगाल डिवीजन

अनुभव/गवाही/रिपोर्ट :

- **2026 कैडेट्स का ऑर्डिनेशन, कमीशनिंग और ग्रेजुएशन**
  मेजर अनिल मसीह, *लिटरेरी ऑफिसर*
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **बाईबल ओरेटोरिकल प्रतियोगिता**
  मेजर अशोक मसीह, *डिवीजनल यूथ सेक्रेटरी, गुरदासपुर डिवीजन*
- **जल और लैंगिकता सेमिनार**
  मेजर रूबी, *सोशल सेक्रेटरी*
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **एक्युमेनिकल सहभागिता**
  मेजर अजीत मैसी
  पब्लिक एवं एक्युमेनिकल रिलेशन्स ऑफिसर / इमरजेंसी ऑफिसर,
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- **मेरा अनुभव - आई.सी.ओ. सेशन 264, लंदन**
  मेजर जीन कैथलीन लिम्मा
  कोर कमांडिंग ऑफिसर, अंडमान एक्सटेंशन
- **जूनियर होमलीग सभा**
  मेजर कुलदीप सरोज
  पड्डा कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन
- **नौजवानों की सभा**
  मेजर रिंकू, *खुशहालपुर कोर, डेरा बाबा नानक*
- **बाईबल भाषण प्रतियोगिता - कोर स्तर पर**
  कैप्टन विक्टर मसीह,
  कोर कमांडिंग ऑफिसर, जोगोवाल बेदियाँ कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन

Harvest Festival and The Spiritual Fruit

फसली त्यौहार और आत्मिक फल

फसली त्यौहार केवल खेतों की उपज का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमारे आत्मिक जीवन का भी गहरा प्रतीक है। जिस प्रकार किसान धरती से अन्न प्राप्त करता है, उसी प्रकार विश्वासियों को आत्मा से फल उत्पन्न करने के लिए बुलाया गया है। बाईबल कहती है: ***"पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है।"*** (गलातियों 5:22-23)।

जब हम फसली त्यौहार मनाते हैं, तो यह हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर ने हमें केवल दुनियावी आशीषें ही नहीं दीं, बल्कि आत्मिक आशीष भी दी है। खेतों की लहलहाती फसल हमें यह शिक्षा देती है कि जैसे बीज बोने से अन्न मिलता है, वैसे ही विश्वास और आज्ञाकारिता से आत्मिक फल उत्पन्न होते हैं।

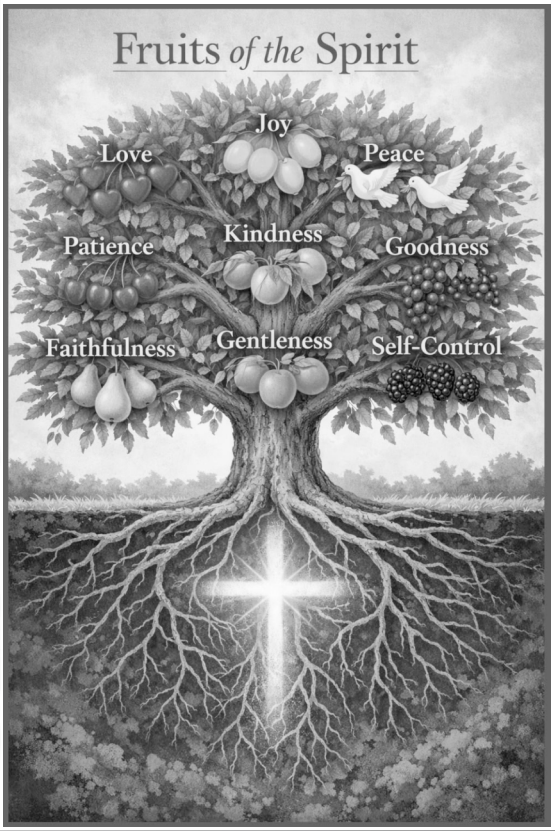

पुराने नियम में इस्राएलियों को अपनी उपज का पहला फल प्रभु को अर्पित करने की आज्ञा दी गई थी (निर्गमन 23:16)। यह हमें सिखाता है कि हमारे जीवन का पहला और सर्वोत्तम भाग परमेश्वर को समर्पित होना चाहिए। नए नियम में यीशु ने कहा: ***"मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो; जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वह बहुत फल लाता है।"*** (यूहन्ना 15:5)। यह वचन हमें याद दिलाता है कि आत्मिक फल

केवल मसीह में बने रहने से ही संभव है।

फसल उत्सव का वास्तविक अर्थ है - शुक्रगुजारी और फलदायी जीवन। जब हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं, तो हमें यह भी देखना चाहिए कि क्या हमारे जीवन में आत्मा के फल प्रकट हो रहे हैं। प्रेम, धीरज, भलाई और विश्वास हमारे समुदाय और परिवार में दिखाई देने चाहिए।

इस महीने में, जब हम फसली त्यौहार मनाते हुए उसके दया आसन पर आते हैं तो आइए हम सब मिलकर फसली त्यौहार को केवल अन्न की भरपूरता का पर्व न मानें, बल्कि आत्मिक फल उत्पन्न करने की चुनौती और अवसर के रूप में देखें। खेतों की फसल हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर चाहता है कि हमारे जीवन भी आत्मा के फलों से भरपूर हों।

"इस से मेरा पिता महिमा पाता है कि तुम बहुत फल लाओ, और मेरे चेले ठहरो।" (यूहन्ना 15:8)

परमेश्वर सभी पाठकों को बहुतायत से बरकत देवे। आमीन।

मेजर अनिल मसीह
लिटरेरी ऑफिसर
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Prepared for a New Beginning by the Holy Spirit

पवित्र आत्मा द्वारा एक नई शुरुआत के लिए तैयार

बाईबल पाठ : प्रेरितों के काम 2:1-21

मसीह यीशु में मेरे प्रियजनों, जैसा कि हम **'पिन्तेकुस्त इतवार'** (Whit Sunday) मना रहे हैं - जिसे **'पिन्तेकुस्त का दिन'** भी कहा जाता है - यह कलीसिया के इतिहास में सबसे शक्तिशाली और परिवर्तनकारी क्षणों में से एक है। हमारे प्रभु के पुनरुत्थान के पचास दिन बाद, और उसके स्वर्गारोहण के दस दिन बाद,

कुछ असाधारण घटित हुआ :

- ***स्वर्ग ने पृथ्वी को छुआ।***
- ***भयभीत चेले साहसी प्रेरित बन गए।***
- ***कलीसिया का जन्म हुआ।***

पिन्तेकुस्त केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं है; यह एक आध्यात्मिक वास्तविकता है जिसका अनुभव आज हर विश्वासी को करना चाहिए। जब हम इस पवित्र दिन पर मनन करते हैं, तो हमारे हृदय उसी आत्मा को ग्रहण करने के लिए खुले हों, जो उस ऊपरी कमरे में सक्रिय थी।

1. पवित्र आत्मा का वायदा : यीशु के स्वर्गारोहण से पहले, उसने एक वायदा किया था: **"जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम सामर्थ्य पाओगे..."** (प्रेरितों के काम 1:8)। ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा, **"तुम्हें जानकारी मिलेगी,"** या **"तुम्हें धर्म मिलेगा।"** उसने कहा, **"तुम्हें सामर्थ्य मिलेगी।"** यह सामर्थ्य व्यक्तिगत महिमा या आध्यात्मिक मनोरंजन के लिए नहीं थी। यह गवाही देने की सामर्थ्य थी, मसीह के लिए जीने की सामर्थ्य थी, उसकी कलीसिया का निर्माण करने की सामर्थ्य थी, पाप पर विजय पाने की सामर्थ्य थी, और एक टूटी हुई दुनिया में प्रेम करने की सामर्थ्य थी। पिन्तेकुस्त हमें याद दिलाता है कि मसीही जीवन मानवीय शक्ति से नहीं, बल्कि ईश्वरीय सशक्तिकरण से जिया जाता है।

2. विश्वासियों की एकता : प्रेरितों के काम 2:1 एक सरल लेकिन गहन सत्य के साथ शुरू होता है: **"वह सब एक ही जगह पर एक साथ थे।" आत्मा के उतरने से पहले, कलीसिया एकजुट थी :**

प्रार्थना में एकजुट / अपेक्षा में एकजुट / भक्ति में एकजुट।

पवित्र आत्मा सबसे अधिक शक्तिशाली रूप से वहाँ कार्य करती है जहाँ एकता होती है। आज, कलीसिया को विभिन्न संप्रदायों, भाषाओं, संस्कृतियों और पृष्ठभूमियों के बीच इसी एकता की आवश्यकता है। पिन्तेकुस्त **"बाबेल"** (Babel) के बिखराव को उलट देता है। बाबेल में, भाषा ने लोगों को विभाजित किया था; पिन्तेकुस्त में, भाषा ने लोगों को एक ही संदेश में एकजुट किया: ***यीशु मसीह ही प्रभु है।***

जब पवित्र आत्मा आता है, तो वह दीवारों को गिरा देता है और पुलों का निर्माण करता है।

3. ध्वनि, वायु और अग्नि : लूका पिन्तेकुस्त के क्षण का वर्णन शक्तिशाली दर्शन का उपयोग करके करता है: एक जोरदार आँधी जैसी ध्वनि, आग की लपटें जो प्रत्येक व्यक्ति पर ठहर गईं, और विश्वासियों का अन्य भाषाओं में बोलना। हर प्रतीक हमें पवित्र आत्मा के बारे में कुछ बताता है:

हवा - ईश्वर की अदृश्य लेकिन अदम्य गति

आप हवा को देख नहीं सकते, लेकिन उसके असर को देख सकते हैं। जब पवित्र आत्मा चलता है, तो वह दिलों को बदल देता है, जिंदगियों को नया रूप देता है, और लोगों को आजाद करता है।

आग - शुद्धिकरण, जोश, और उपस्थिति : परमेश्वर की आग पाप को जलाकर भस्म कर देती है, ठंडे दिलों को गरमा देती है, और उसके मिशन के लिए जोश जगाती है।

भाषाएँ - सभी लोगों के लिए परमेश्वर का संदेश : कलीसिया (Church) शुरू से ही बहुभाषी है, क्योंकि सुसमाचार स्वर्ग के नीचे हर राष्ट्र के लिए है।

पिन्तेकुस्त हमें आमंत्रित करता है कि हम अपने जीवन को पवित्र आत्मा की हवा, आग, और आवाज के लिए खोल दें।

4. डर से निडरता की ओर : पिन्तेकुस्त से पहले, चेले डरे हुए थे और बंद दरवाजों के पीछे छिपे हुए थे। पिन्तेकुस्त के बाद, वे निडर हो गए और यरूशलेम की सड़कों पर सबके सामने प्रचार करने लगे। यह बदलाव कैसे आया?

पवित्र आत्मा के कारण : पतरस, जिसने एक बार यीशु को तीन बार ठुकराया था, अब निडर होकर खड़ा हुआ और एक ऐसा उपदेश दिया जिससे 3,000 आत्माएँ परमेश्वर के राज्य में शामिल हो गईं। पवित्र आत्मा साधारण लोगों को असाधारण प्रभाव डालने वाले माध्यमों में बदल देता है। **आज भी, परमेश्वर लोगों को शक्ति देता है:**

- ***डरपोक लोगों को साहसी बनने की शक्ति***
- ***टूटे हुए लोगों को फिर से संवरने की शक्ति***
- ***निराश लोगों को नया जोश पाने की शक्ति***
- ***खामोश लोगों को अनुग्रह के साथ बोलने की शक्ति***

5. आज की कलीसिया के लिए पवित्र आत्मा : पिन्तेकुस्त इतिहास की कोई एक बार होने वाली घटना नहीं है; यह कलीसिया का निरंतर चलने वाला जीवन है। आज हमें पवित्र आत्मा की जरूरत है: अपने परिवारों में, अपनी सेवकाई में, अपने कार्यस्थलों में, अपने निर्णयों में, अपनी आराधना में, अपनी गवाही में।

पवित्र आत्मा के बिना, कलीसिया एक ऐसे शरीर की तरह है जिसमें साँस न हो - वह मौजूद तो है, लेकिन जीवित नहीं है।

पिन्तेकुस्त हमें याद दिलाता है कि हमें इंसानी ताकत से चलने वाली मसीहियत जीने के लिए नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा से भरी हुई मसीहियत जीने के लिए बुलाया गया है।

पिन्तेकुस्त को फिर से घटने दें : जैसे ही हम **'पिन्तेकुस्त संडे' (Whit Sunday)** मनाते हैं, हमें शुरुआती कलीसिया की तरह प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित किया जाता है: **"आ, पवित्र आत्मा।"**

आज हमारी प्रार्थना यही हो :

- **आ, पवित्र आत्मा आ, और हमें एक कर दे।**
- **आ, पवित्र आत्मा आ, और हमें शुद्ध कर दे।**
- **आ, पवित्र आत्मा आ, और हमें शक्ति दे।**
- **आ, पवित्र आत्मा आ, और अपनी कलीसिया में नया जीवन फूँक दे।**

पिन्तेकुस्त सिर्फ कैलेंडर पर लिखी एक तारीख न रहे, बल्कि हमारे दिलों में एक अनुभव बन जाए। हे स्वर्गीय पिता, पिन्तेकुस्त के दिन दिए गए पवित्र आत्मा के वरदान के लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं। आज हमें अपनी वायु, अपनी अग्नि और अपनी सामर्थ्य से फिर से भर दीजिए। हमें रूपांतरित कीजिए, हमें एकजुट कीजिए, और अपने प्रेम के साहसी गवाहों के रूप में हमें भेजिए। हमारे जीवन को अपने अनुग्रह की गवाही बनाइए। आइए, हे पवित्र आत्मा, और अपने कलीसिया का नवीनीकरण कीजिए। हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

लेफ्टिनेंट कर्नल सुरेश मसीह
सेक्रेटरी फॉर प्रोग्राम्स
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

A Mother's Heart / माँ का हृदय

माँ का हृदय परमेश्वर के प्रेम का प्रतिबिंब है। बाईबल हमें दिखाती है कि माँ का जीवन केवल परिवार की देखभाल तक सीमित नहीं है, बल्कि वह विश्वास और त्याग का जीवंत उदाहरण है।

1. प्रेम : माँ का प्रेम गहरा और निस्वार्थ होता है। नीतिवचन 31:28 कहता है: ***"उसके पुत्र उठकर उसे धन्य कहते हैं; उसका पति भी उसकी प्रशंसा करता है।"***

माँ अपने बच्चों को केवल जीवन नहीं देती, बल्कि उन्हें सच्चे प्रेम से पोषित करती है। यह प्रेम हमें परमेश्वर के उस प्रेम की याद दिलाता है जो कभी समाप्त नहीं होता।

2. त्याग : हन्ना की कहानी हमें माँ के त्याग का उदाहरण देती है। उसने अपने पुत्र शमूएल को प्रभु की सेवा में अर्पित किया (1 शमूएल 1:28)। माँ का त्याग केवल भौतिक नहीं होता, बल्कि आत्मिक भी होता है। वह अपने बच्चों को सही मार्ग पर ले जाने के लिए अपने आराम और इच्छाओं को छोड़ देती है।

3. विश्वास : मरियम, यीशु की माता, ने परमेश्वर की योजना को स्वीकार किया और कहा: ***"देख, मैं प्रभु की दासी हूँ; तेरे वचन के अनुसार मेरे साथ हो।"*** (लूका 1:38)

माँ का विश्वास हमें सिखाता है कि परमेश्वर की इच्छा को मानना ही सच्ची आज्ञाकारिता है। माँ अपने बच्चों को विश्वास की नींव देती है, जिससे वे जीवन की कठिनाइयों में स्थिर रह सकें।

निष्कर्ष : माँ का हृदय प्रेम, त्याग और विश्वास का संगम है। मातृ दिवस पर हमें अपनी माताओं का सम्मान करना चाहिए और उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। माँ का हृदय हमें सिखाता है कि सच्चा प्रेम दूसरों के लिए जीता है और परमेश्वर की योजना पर भरोसा करता है।

लेफ्टिनेंट कर्नल सुनीता रॉबर्ट
टैरिटोरियल सेक्रेटरी फॉर स्पिरिचुअल लाइफ डेवलपमेंट
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

The Weapon of God
परमेश्वर के हथियार

इफिसियों 6:10-18 में पाया जाने वाला परमेश्वर के हथियार का संदेश, सुरक्षा, ताकत और आत्मिक लड़ाई के बारे में बाइबल की सबसे शक्तिशाली शिक्षाओं में से एक है। यह एक सिपाही के कवच की कल्पना का इस्तेमाल यह बताने के लिए करता है कि विश्वासी जीवन की अनदेखी लड़ाइयों के खिलाफ कैसे मजबूती से खड़े रह सकते हैं। यह लड़ाइयाँ शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक हैं-जो प्राण, हृदय और आत्मा से लड़ी जाती हैं। यह हिस्सा हमें याद दिलाता है कि चुनौतियाँ तो आनी ही हैं, लेकिन हम कमजोर नहीं हैं। परमेश्वर हमें मजबूत, सुरक्षित और जीतने के लिए जरूरी हर एक चीज प्रदान करता है।

पौलुस एक साफ आदेश के साथ शुरूआत करता है: ***"इसलिये प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।"*** यह पूरे संदेश के लिए माहौल तैयार करता है। सच्ची ताकत सिर्फ इंसान की काबलियत, समझदारी या कोशिश से नहीं आती। इसके बजाय, यह परमेश्वर के साथ रिश्ते से आती है। कमजोरी, डर या उलझन के समय, यह सच जरूरी हो जाता है। आत्मिक लड़ाई इंसानी ताकत से नहीं लड़ी जा सकती; इसके लिए परमेश्वर की ताकत की जरूरत होती है।

"परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लेने" का विचार समझ बूझकर किए गए काम का सुझाव देता है। जैसे एक सिपाही कवच के हर टुकड़े को ध्यान से पहनकर लड़ाई की तैयारी करता है, वैसे ही विश्वासियों को भी आत्मिक चुनौतियों के लिए खुद को होशपूर्वक तैयार करना चाहिए। यह तैयारी कभी-कभार नहीं होती-यह रोज होती है। जिंदगी में लगातार ऐसे हालात आते हैं जो विश्वास, चरित्र और सहनशक्ति की परीक्षा लेते हैं, और कवच ऐसे पलों में सुरक्षा और ताकत दोनों का काम करता है।

कवच का पहला भाग सच्चाई का कमरबन्द है। पुराने जमाने में, कमरबन्द कवच के बाकी सभी हिस्सों को एक साथ रखता था। इसके बिना, सब कुछ बिखर जाएगा। आध्यात्मिक रूप से, सच्चाई एक मजबूत जिंदगी की नींव है। यह ईमानदारी, सच्चाई और परमेश्वर के वचन की गहरी समझ को दिखाता है। उलझन, गलत जानकारी और बदलते मूल्यों से भरी दुनिया में, सच्चाई हमें जमीन से जोड़े रखती है। यह हमें धोखे से बचाती है और यह समझने में मदद करती है कि क्या सही है। जब हम सच्चाई में जीते हैं, तो हम साफ और आत्म-विश्वास के साथ चलते हैं।

इसके बाद धार्मिकता की झिलम है, जो दिल की रक्षा करता है। दिल हमारी भावनाओं, इच्छाओं और अंदर की जिंदगी की निशानी है। धार्मिकता का मतलब है परमेश्वर की इच्छा के हिसाब से जीना-मुश्किल होने पर भी सही चुनना। इसका मतलब सिद्ध होना नहीं है, बल्कि उन्नति और ईमानदारी के लिए समर्पित होना है। जब हम धार्मिकता से जिंदगी जीते हैं, तो हम अपने दिलों को ग्लानि, शर्म और आत्मिक नुकसान से बचाते हैं। यह हमारे चरित्र को मजबूत करता है और हमें परमेश्वर के मकसद के साथ जोड़े रखता है।

तीसरा हिस्सा मेल के सुसमाचार के जूते हैं। एक सिपाही के जूते मजबूती और चलने के लिए जरूरी थे। इसके बिना, वह मजबूती से खड़े नहीं रह सकते थे या असरदार तरीके से आगे नहीं बढ़ सकते थे। मेल का सुसमाचार विश्वासियों को मुश्किल हालात में भी शांति और भरोसे का एहसास कराता है। यह शांति इस बात को जानने से आती है कि हम परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं और उसके प्रेम में सुरक्षित हैं। यह हमें जिंदगी की चुनौतियों से आत्मविश्वास के साथ गुजरने और झगड़े वाली स्थितियों में मेल लाने में मदद करता है। डर या गुस्से से प्रतिक्रिया करने के बजाय, हम मेल और शालीनता से जवाब देते हैं।

विश्वास की ढाल कवच का एक और जरूरी हिस्सा है। पुराने युद्धों में, ढालें पूरे शरीर की रक्षा करने के लिए काफी बड़ी होती थीं और अक्सर जलते हुए तीरों को रोकने के लिए इस्तेमाल की जाती थीं। पौलुस विश्वास को ऐसी ढाल बताता है जो इन हमलों को बुझा देती है। **"जलते हुए तीरों"** को शक, डर, लालच और नकारात्मक विचारों के रूप में समझा जा सकता है। विश्वास परमेश्वर के वायदों पर भरोसा है, तब भी जब हालात पक्के न लगें। यह मानना है कि परमेश्वर मौजूद है, भला है और भरोसेमंद है। जब हम विश्वास की ढाल उठाते हैं, तो हम जिंदगी के दबावों से खुद को बचाते हैं।

उद्धार का टोप सिर की रक्षा करता है, जो मन को दिखाता है। हमारे विचार हमारे कामों, भावनाओं और जिंदगी को देखने के नजरिए को बनाते हैं। उद्धार का मतलब सिर्फ भविष्य में बचाए जाना नहीं है; यह इस जागरूकता के साथ जीना है कि हमसे प्यार किया जाता है, हमें माफ किया जाता है और हमें छुड़ाया जाता है। यह भरोसा हमारे मन को निराशा, असुरक्षा और डर से बचाता है। जब हम याद करते हैं कि हम परमेश्वर में कौन हैं, तो हमें आत्मविश्वास और स्थिरता मिलती है। उद्धार का टोप हमें नकारात्मकता के बजाय उम्मीद और सच्चाई पर ध्यान देने की याद दिलाता है।

कवच का आखिरी हिस्सा आत्मा की तलवार है, जो परमेश्वर का वचन है। यह कवच का एकमात्र हमला करने वाला हथियार है। जबकि दूसरे हिस्से रक्षा करते हैं, तलवार हमें आध्यात्मिक लड़ाई में सक्रिय रूप से शामिल होने की इजाजत देती है। परमेश्वर का वचन ज्ञान, मार्गदर्शन और सच्चाई देता है। यह हमें लालच का विरोध करने, गलत विश्वासों को चुनौती देने और समझदारी भरे फैसले लेने में मदद करता है। जब हम परमेश्वर के वचन को जानते हैं और उस पर अमल करते हैं, तो हम चुनौतियों का सामना साफ तौर पर और अधिकार के साथ करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

पौलुस इस सबक को प्रार्थना के महत्व पर जोर देकर खत्म करते हैं। प्रार्थना को अलग से कवच के तौर पर नहीं बताया गया है, लेकिन यह उन सभी के असर के लिए जरूरी है। प्रार्थना से ही हम परमेश्वर से जुड़े रहते हैं, ताकत पाते हैं, और जागरूक रहते हैं। प्रार्थना हमें आध्यात्मिक रूप से जागरूक रखती है और याद दिलाती है कि हम अकेले नहीं लड़ रहे हैं। यह हर स्थिति में परमेश्वर की मौजूदगी को दर्शाती है और हमारे दिलों को उसकी इच्छा के साथ जोड़ती है।

आध्यात्मिक लड़ाई का विचार कभी-कभी बहुत मुश्किल लग सकता है, लेकिन यह समझना जरूरी है कि यह लड़ाई का हिस्सा है।

रोजमर्रा की जिंदगी में जिन लड़ाइयों का हम सामना करते हैं, वे अक्सर सूक्ष्म तरीकों से सामने आती हैं - नकारात्मक विचार, नैतिक दुविधाएँ, भावनात्मक संघर्ष, या रिश्तों में टकराव। **'परमेश्वर का कवच' (Armor of God)** हमें सिखाता है कि इन चुनौतियों के लिए आध्यात्मिक जागरूकता और तैयारी की जरूरत होती है। यह हमें इस बात के प्रति सचेत रहने को कहता है कि हम कैसे सोचते हैं, कैसे काम करते हैं, और कैसे प्रतिक्रिया देते हैं।

इस संदेश का सबसे शक्तिशाली पहलू यह याद दिलाना है कि हमारा संघर्ष दूसरे लोगों के खिलाफ नहीं है। यह हमारे नजरिए को पूरी तरह से बदल देता है। दूसरों को दुश्मन मानने के बजाय, हम यह पहचानते हैं कि असली लड़ाई उन ताकतों के खिलाफ है जो फूट, डर और विनाश लाना चाहती हैं। यह समझ हमारे रिश्तों में करुणा, धैर्य और क्षमा को बढ़ावा देती है।

"परमेश्वर का कवच" धारण करना एक रोजाना की प्रतिबद्धता है। इसका मतलब है झूठ के बजाय सच को चुनना, समझौते के बजाय धार्मिकता को चुनना, चिंता के बजाय शांति को चुनना, डर के बजाय विश्वास को चुनना, और निराशा के बजाय आशा को चुनना। इसका मतलब है परमेश्वर के वचन में मजबूती से टिके रहना और प्रार्थना का एक नियमित जीवन बनाए रखना। ये चुनाव भले ही छोटे लगें, लेकिन वे एक मजबूत और लचीली आध्यात्मिक नींव बनाते हैं।

व्यावहारिक रूप से, इस संदेश को सरल तरीकों से जिया जा सकता है। दिन की शुरुआत प्रार्थना और चिंतन के साथ करना आध्यात्मिक शक्ति के लिए एक सही माहौल बनाता है। अपने विचारों के प्रति सचेत रहना हमारे मन की रक्षा करने में हमारी मदद करता है। अपने कार्यों में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को चुनना **'सच्चाई के कमरबन्द'** को दर्शाता है। चुनौतियों का सामना शांति और भरोसे के साथ करना **'शांति के जूते' और 'विश्वास की ढाल'** को प्रदर्शित करता है।

अंतत:, **'परमेश्वर का कवच'** आशा और सशक्तिकरण का संदेश है। यह हमें भरोसा दिलाता है कि जीवन की चुनौतियों के सामने हम निहत्थे नहीं हैं। परमेश्वर ने हमें वह सब कुछ दिया है जिसकी हमें मजबूती से खड़े रहने, शक्तिशाली बने रहने और जीत हासिल करने के लिए जरूरत है। यह एक याद दिलाता है कि हम चाहे किसी भी चीज का सामना करें, हम सुसज्जित हैं, सुरक्षित हैं, और हमें सहारा मिला हुआ है।

यह शिक्षा हमें समझदारी, हिम्मत और भरोसे के साथ जीवन जीने के लिए बुलाती है। यह हमें अपने विश्वास पर मजबूत रहने, परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करने और जीवन की राह पर आत्मविश्वास से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। जब हम **'परमेश्वर का पूरा कवच'** पहनते हैं, तो हम सिर्फ किसी लड़ाई के लिए तैयार नहीं होते, बल्कि एक उद्देश्यपूर्ण, मजबूत और अटूट आध्यात्मिक जीवन की ओर कदम बढ़ाते हैं।

परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे।

मेजर रॉबिन

चर्च ग्रोथ सेक्रेटरी, उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Mothers' Day / माओं का दिन

माओं का दिन एक विशेष दिन है जो माओं, मातृत्व, मातृ-स्नेह, और समाज में माताओं के प्रभाव को सम्मान देने के लिए समर्पित है। यह दुनिया भर में अलग-अलग तिथियों पर मनाया जाता है, सबसे अधिक मार्च या मई में।

यह दिन व्यक्तियों, परिवारों और समाज को यह पहचानने का अवसर देता है कि माँ जीवनभर कितना प्यार, देखभाल, त्याग और मार्गदर्शन देती हैं।

हम माओं का दिन क्यों मनाते हैं?

हम माओं का दिन इसलिए मनाते हैं :

1. कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए : माओं को उनके निस्वार्थ प्रेम, करुणा, और बच्चों व परिवार के लिए किए गए अनगिनत त्यागों के लिए धन्यवाद देने हेतु।

माएँ बच्चों को संस्कार सिखाने, उनका चरित्र निर्माण करने और उन्हें जीवन में आगे बढ़ाने में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

2. मातृत्व की भूमिका का सम्मान करने के लिए : मातृत्व हमेशा से समाज की भावनात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तंभ रहा है।

इस दिन हम न सिर्फ माँ, बल्कि दादी-नानी, गोद लेने वाली माँ, और अन्य देखभाल करने वालों का भी सम्मान करते हैं।

3. पारिवारिक रिश्तों को मजबूत करने के लिए : यह दिन परिवारों को एक साथ समय बिताने, प्रेम व्यक्त करने और अपने रिश्तों को मजबूत करने का अवसर देता है।
हमारे जीवन में माओं के दिन का महत्व

माओं का दिन का हमारे जीवन में भावनात्मक और सांस्कृतिक महत्व है :

1. यह याद दिलाता है कि हमें माँ को कम नहीं समझना चाहिए।

दैनिक जीवन में हम अक्सर उनकी मेहनत को नजरअंदाज कर देते हैं। यह दिन हमें उनके योगदान पर विचार करने का अवसर देता है।

2. यह भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर देता हैं।
कई लोग रोजमर्रा की व्यस्तताओं में अपने प्यार को ठीक से व्यक्त नहीं कर पाते। यह दिन उन्हें दिल से आभार और प्रेम व्यक्त करने का अवसर देता है।

3. यह मातृत्व के सांस्कृतिक महत्व को मजबूत करता है।
दुनिया भर की संस्कृतियों में माताएँ करुणा, निस्वार्थता और त्याग का प्रतीक मानी जाती हैं। यह उत्सव इन मूल्यों के प्रति सम्मान बढ़ाता है।

4. यह सिर्फ माँ नहीं, बल्कि सभी देखभाल करने वालों का सम्मान करता है।
आज के समय में यह दिवस उन सभी के लिए है जो हमारे जीवन में पोषण और सहयोग की भूमिका निभाते हैं - जैसे पिता, अभिभावक, संरक्षक और अन्य देखभालकर्ता।

माओं के दिन की शुरुआत : आधुनिक माओं के दिन की शुरुआत 20वीं शताब्दी की शुरुआत में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुई।

मुख्य ऐतिहासिक व्यक्तित्व :

1. ऐन रीव्स जार्विस (Ann Reeves Jarvis)
- अमेरिकी गृहयुद्ध से पहले और बाद में शांति कार्यकर्ता थीं।
- महिलाओं की सहायता और जनस्वास्थ्य सुधार के लिए मदर्स डे वर्क क्लब्स शुरू किए।
- यूनियन और कॉन्फेडरेट परिवारों के बीच शांति स्थापित करने हेतु मदर्स फ्रेंडशिप डे का आयोजन किया।

2. अन्ना जार्विस (Anna Jarvis) - ऐन की बेटी
- आधुनिक मदर्स डे की संस्थापक के रूप में जानी जाती हैं।
- 1905 में माँ के निधन के बाद उन्होंने माताओं के सम्मान में एक राष्ट्रीय दिवस के लिए अभियान शुरू किया।
- 10 मई 1908 को वेस्ट वर्जीनिया के ग्राफ्टन में पहला अधिकारिक मदर्स डे समारोह आयोजित किया।

3. आधिकारिक मान्यता : 1914 में, अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने मई के दूसरे रविवार को आधिकारिक मदर्स डे घोषित करने वाला दस्तावेज हस्ताक्षरित किया।

सारांश में : माओं का दिन सिर्फ एक त्योहार नहींख़यह कृतज्ञता, प्रेम और सम्मान का एक गहरा उत्सव है। यह हमें याद दिलाता है कि माँ हमारे जीवन और समाज में कितनी अपरिवर्तनीय और अमूल्य भूमिका निभाती हैं। शांति, स्वास्थ्य और सामंजस्य के ऐतिहासिक आंदोलनों से जन्मा यह दिन आज मातृत्व के वैश्विक उत्सव का रूप ले चुका है।

मेजर अजीत मैसी
पब्लिक एवं एक्युमेनिकल रिलेशन्स ऑफिसर / इमरजेंसी ऑफिसर
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

I Am Who I Am
मैं जो हूँ, सो हूँ। (परमेश्वर का वचन)

प्रभु यीशु मसीह के नाम में मेरी ओर से सलाम।

आज हम परमेश्वर के वचन में से देखेंगे, निर्गमन 3:13-15 तक कि परमेश्वर के वचन हमारे साथ क्या बात कर रहा है। परमेश्वर के वचन में से जब हम पढ़ते हैं तो वहाँ पर लिखा है। मूसा ने परमेश्वर से कहा, "जब में इस्त्राएलियों के पास जाकर उसने कहूँ, तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। तब यदि वह मुझ से पूछें, **"उसका क्या नाम है?"** तब मैं उनको क्या बताऊँ? फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा, **"मैं जो हूँ सो हूँ।"** फिर उसने कहा, तू इस्त्राएलियों से यह कहना, जिसका नाम में हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। निर्गमन 3:13-15 वचन में लिखा है। परमेश्वर ने मूसा से कहा, तू उनसे अर्थात इस्त्राएलियों से कहना, तुम्हारे पितरों का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर यहोवा, उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। देख, सदा तक मेरा नाम यही रहेगा और पीढ़ी दर पीढ़ी में तेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा। सच में हमारा परमेश्वर युगानयुग एक सा है। जैसे उसने मूसा को अपने बारे में इस्त्राएलियों को बताने को कहा कि **"मैं जो हूँ सो हूँ"** वही परमेश्वर आज भी हमारे साथ अपनी भलाई करता है और हमेशा अपने वचन को पूरा करता है। भले

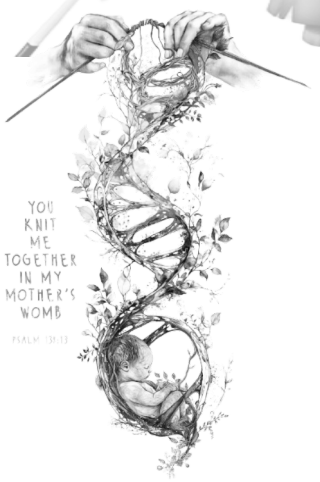

ही मूसा अपने मन में डर रहा था लेकिन परमेश्वर ने उसे हिम्मत दी ताकि वह इस्त्राएलियों को मिस्त्र से बाहर निकाल सकें और परमेश्वर ने उसे पूरा भी किया। यदि हम निर्गमन 4 अध्याय को पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने मूसा को दो निशान इस्त्राएलियों को करके दिखाने को कहा। परमेश्वर मूसा को सिखाता गया कि उसे क्या-क्या करना है। निर्गमन 4:10-13 में जब हम पढ़ते हैं, हमें पता चलता है कि मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं बोलने में निपुर्ण नहीं हूँ। यहोवा ने उससे कहा कि मनुष्य के मुँह को किसने बनाया है? मुझ यहोवा को छोड़ यह सब कौन बनाता है। परमेश्वर ने मूसा से कहा अब जा मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा, सिखाता जाऊँगा। जब फिर भी मूसा ने कहा कि मेरे प्रभु कृपया किसी और को भेजें तो परमेश्वर को मूसा के ऊपर गुस्सा आया क्योंकि परमेश्वर के वचन में जब हम निर्गमन 3:14 में पढ़ते हैं यहाँ तो लिखा है, परमेश्वर ने मूसा से कहा कि **"मैं जो हूँ, सो हूँ"** परमेश्वर सब कुछ कर सकता है। परमेश्वर ने मूसा से कहा क्या तेरा भाई लेवीय हारून नही है। परमेश्वर ने कहा कि वह बोलने में निपुण है। परमेश्वर ने मूसा से कहा, तू उसे यह बातें सिखाना और मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हें करना होगा वह तुमको सिखलाता जाऊँगा। परमेश्वर ने मूसा की मदद हर समय में की जब भी वह अपने आपको कमजोर समझता था। आज जरूरत है कि हम भी मूसा कि तरह परमेश्वर के साथ चलेंगे तो परमेश्वर हमारी हमेशा मदद करेंगे। परमेश्वर आप सभी को इस वचन के द्वारा बहुत सारी आशिष दे। आमिन

मेजर सुमन बेन्थन
चिमयारी कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन

Bearing The Fruits / फल देना।

"मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।" यूहन्ना 15:8

परिचय : इस वचन को प्रेरित यूहन्ना के द्वारा लिखा गया है, ***"ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है और विश्वास करने से तुम उसके नाम में जीवन पाओ।"***

यूहन्ना ही प्रभु यीशु मसीह का प्रिय चेला था। जिसको यीशु सभी चेलों से अधिक प्रेम रखता था और उसके ऊपर सम्पूर्ण विश्वास करता था।

फल देने का क्या अर्थ : हम वह कार्य करेंगे जो वह हमें करने की आज्ञा देता है। विशेष रूप सक, हमें जो फल उत्पन्न करने के लिये कहा गया है, वह है दूसरों के प्रति प्रेम जैसा

कि यीशु ने हमें प्रेम किया है। क्योंकि हमें मसीही समुदाय में एक दूसरे से वैसे ही प्रेम करना है। जब हम यूहन्ना 15 अध्याय को पढ़ते हैं तो यीशु मसीह हमें सिखाते हैं कि वृक्ष को अच्छे फल देने चाहिए। हमारा जीवन भी एक पेड़ की तरह है जिसमें बहुत सारे अच्छे फल लगने चाहिए।

यीशु ने हमें स्पष्ट रूप से बताया कि बताया कि जब हम अच्छे फल देते हैं तभी हम उनके शिष्य बनते हैं।

एक शाखा को जीवित रहने के लिये वृक्ष के तने से मजबूती जुड़ा रहना चाहिए, शाखा को शक्ति पोषण, सुरक्षा और ऊर्जा होती है।

मसीह के साथ जुड़ने का अर्थ : विश्वासियों स्वंय कोई जीवन, बल या आत्मिक शक्ति वह जा भी कुछ उनके पास होता है वह मसीह यीशु की ओर से प्राप्त होता है। केवल मसीह में बने रहने के द्वारा ही वह अपने जीवन आत्मिक फल ला सकते हैं। जब हम उस आधाएँ जैसे घमण्ड और स्वार्थीपन को अपने जीवन से अलग करने देते हैं तब वह और अधिक फल लाते हैं।

वह जो फल नही लाते, वह दाखलता की उन मृतक शाखाओं की तरह है जो दाखलता में बने रहने के बाद भी उसमें कोई जीवन प्राप्त नही कर सकते हैं। ऐसे लोग कहते तो है कि वह यीशु के शिष्य है, परन्तु उससे उनकी संगति नही है, उनमें जीवन नही है। वह जो सच्चे शिष्य हैं, अपने फलों से ही इसे सिद्ध कर देते हैं और यह फल मसीह की संगति के द्वारा ही उत्पन्न हो सकते हैं : ***"फल जैसे प्रभावशाली प्रार्थना, प्रेम, मसीह की इच्छा के लिये आज्ञाकारी होना और आनन्द।"*** (यूहन्ना 15:7-11)

यीशु मसीह चाहता है कि उसके शिष्य स्वतंत्र (आज़ादी) इच्छा और प्रेम से उसकी सेवा करें।

उनसे यह भी चाहता है कि वह समझदारी के साथ उसकी सेवा करे।

- **यह फल पेड़ में रहने से होते हैं :** अच्छे पेड़ अच्छे फल देते हैं और बुरे पेड़ बुरे फल देते हैं जो वहाँ पहचान के बारे में बात कर रहा है।

खुदा ने मसीहियों का अच्छे पेड़ बनाया है और पहचान में स्थापित होने से अच्छे फल लगते हैं।

"यह हमारे ऊपर है कि हम बहुत सारे फल पैदा करें और ऐसे फल जो बने रहें।"

"लेकिन आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, सहनशीलता, दया, भलाई, विश्वास, नम्रता और आत्मसंयम है। ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नही।" (गलतियों 5:22-23)

यह "फल" मसीह के चरित्र का सार है और हमें इन्ही गुणों को विकसित करने की इच्छा रखनी चाहिए। खुदा आप सभी को आशिष दे।

मेजर परमजीत सलामत मसीह
ए.डब्ल्यू.डी.ओ., उत्तराखण्ड एरिया, रूदरपुर

Harvest Festival – Giving to God

फसली त्योहार-परमेश्वर को देना।

"और हाबिल भी अपनी भेंट बकरियों के कई एक पहलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ल आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया।" (उत्पत्ति 4:4)

संदेश/प्रवचन : "परमेश्वर को कैसा चढ़ावा पसन्द है।"

"हाबिल भी अपनी भेड़ों के पहलौठों और उनकी चर्बी में से ले आया। तब यहोवा ने हाबिल और उसके चढ़ावे को ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसके चढ़ावे का ग्रहण न किया।" (उत्पत्ति 4:4-4)

1. **परमेश्वर चढ़ावे से पहले दिल को देखता है :** इन दो पदों में हम देखते हैं कि दो लोग परमेश्वर के पास चढ़ावा लेकर आये - कैन और हाबिल दोनों ने चढ़वा दिया।

दोनों ने परमेश्वर की आराधना की। दोनों अपने काम की कमाई में से कुछ लेकर आये। लेकिन बाईबल कहती है कि परमेश्वर ने हाबिल और उसके चढ़ावे को ग्रहण किया, पर कैन और उसके चढ़ावे को ग्रहण नहीं किया। इससे हमें एक गहरी सच्चाई मिलती है।

- परमेश्वर केवल यह नही देखता कि हम क्या देते हैं।
- परमेश्वर यह भी देखता है कि हम दिल से देते हैं।

2. **परमेश्वर को अपना उत्तम (सर्वश्रेष्ठ) देना :** हम इस वचन में से सीखते हैं, परमेश्वर ने क्यों हाबिल की भेंट को ग्रहण किया, क्योंकि हाबिल अपनी सभी पैदावार में से अपनी भेड़ बकरियाँ के कई एक पहलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई, तब परमेश्वर ने भेंट को ग्रहण किया। हमें अपने जीवन में परमेश्वर को हमेशा उत्तम ही देना चाहिए। सबसे पहले ही देना चाहिए।

और हम कैन - जीवन में देखते हैं कि वह परमेश्वर को भेंट देने के लिए अपनी भूमि की उपज़ में से बची हुई भेंट लेकर गया था। इसलिए परमेश्वर ने कैन की भेंट को ग्रहण नही किया।

हम इस वचन में सीखते हैं कि हमें परमेश्वर को हमेशा उत्तम ही देना चाहिए।

लैफ्टि. अलिशा
गुज्जा पीर कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन

Harvest Festival - A Celebration of God's Faithfulness

फसली त्यौहार - परमेश्वर की वफादारी का एक उत्सव

फसली त्यौहार मसीही जीवन के सबसे सार्थक उत्सवों में से एक है। यह वह समय है जब हम परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई चीजों, उसकी वफ़ादारी और उसकी भरपूर आशीषों के लिए उसे धन्यवाद देने हेतु एक साथ मिलकर आते हैं।

बाईबल हमें भजन संहिता 24:1 में याद दिलाती है, ***"पृथ्वी और उसमें की सब वस्तुएं यहोवा ही की हैं।"*** यह सत्य हमें सिखाता है कि हमारे पास जो कुछ भी है - हमारा भोजन, संसाधन, और यहाँ तक कि हमारी शक्ति भी - वह सब परमेश्वर से ही आता है।

फसल केवल फसलों तक ही सीमित नहीं है। इसमें जीवन में हमें मिलने वाली हर आशीष शामिल है - आत्मिक विकास, परिवार, स्वास्थ्य और शांति। (भजन संहिता 65:11) इस बात को बहुत खूबसूरती से व्यक्त करता है कि परमेश्वर वर्ष को बहुतायत से सजाते हैं।

"फसली त्यौहार के दौरान हम एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत सीखते हैं - बोना और काटना।" (गलतियों 6:7)। हमारे कार्य, शब्द और चुनाव बीजों के समान होते हैं। जब हम अच्छाई, विश्वास और प्रेम बोते हैं, तो बदले में हमें आशीषों की फसल मिलती है।

यीशु ने भी मत्ती 9:37 में आध्यात्मिक अर्थ में फसल के बारे में बात की थी: ***"फसल तो बहुत है, परन्तु मजदूर थोड़े हैं।"*** यह हमें याद दिलाता है कि हमें न केवल आशीषें पाने के लिए बुलाया गया है, बल्कि परमेश्वर के प्रेम को दूसरों के साथ बांटने के लिए भी बुलाया गया है।

फसली त्यौहार हमें शुक्रगुजारी का महत्व भी सिखाता है। 1 थिस्सलोनिकियों 5:18 में, "हमें हर परिस्थिति में धन्यवाद देने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। शुक्रगुजारी हमारे दृष्टिकोण को बदल देती है और हमारे हृदयों को आनंद और संतोष से भर देती है।"

पुराने नियम में, लोग अपनी पहली फसल (प्रथम फल) चढ़ाकर परमेश्वर का सम्मान करते थे (नीतिवचन 3:9)। आज, हम परमेश्वर को वापस देकर - अपनी भेंटों, सेवा और दूसरों के प्रति अपनी उदारता के माध्यम से - इस परंपरा को जारी रखते हैं।

एक **'मुक्ति फौजिया'** परिवार के रूप में, फसली त्यौहार एकता, सहभागिता और संगति का समय बन जाता है। यह हमें याद दिलाता है कि जब आशीषें बांटी जाती हैं, तो वे कई गुना बढ़ जाती हैं। परमेश्वर हमें आशीष देना जारी रखें - न केवल आशीषें पाने के लिए, बल्कि परमेश्वर के प्रेम को दूसरों के साथ बांटने के लिए भी।

कैप्टन सैमसन फ्रांसिस
कोर कमांडिग ऑफिसर / डी.वाई.एस.,
कोलकाता सेंट्रल कोर, पश्चिम बंगाल डिवीजन

You can't serve from an empty cup

आप खाली प्याले से कुछ नहीं दे सकते।

हमारे रोजमर्रा के जीवन में, हम लगातार कुछ न कुछ देते रहते हैं - अपना समय, ऊर्जा, प्रेम और सेवा। चाहे घर पर हों, काम पर, या अपनी सेवा-कार्य में, हम अक्सर खुद को लगातार देते हुए पाते हैं। लेकिन जो सवाल हमें खुद से पूछना चाहिए, वह यह है: जब हमारा प्याला खाली हो जाता है, तो क्या होता है?

यीशु मत्ती 11:28 में हमें एक सुंदर निमंत्रण देते हैं: ***"हे सब थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।"***

यह निमंत्रण ताकतवर लोगों के लिए नहीं, बल्कि थके हुए लोगों के लिए है। यह उन लोगों के लिए नहीं है जिनके पास सब कुछ व्यवस्थित है, बल्कि उन लोगों के लिए है जो खुद को बोझिल महसूस करते हैं।

एक ***"खाली प्याला"*** ऐसे जीवन को दर्शाता है जो पूरी तरह से चूक गया है - शारीरिक, भावनात्मक या आध्यात्मिक रूप से। बहुत से लोग थके होने पर भी सेवा करना और देना जारी रखते हैं, यह सोचकर कि रुकना कमजोरी की निशानी है। हालाँकि, बाईबल हमें सिखाती है कि विश्राम कमजोरी नहीं है - यह नई ताकत पाने के लिए जरूरी है।

यशायाह 40:31 हमें याद दिलाता है कि जो लोग प्रभु पर आशा रखते हैं, वह अपनी ताकत फिर से पा लेंगे। यह नई ताकत ऐसी चीज नहीं है जिसे हम खुद से पैदा कर सकें; यह परमेश्वर की ओर से आती है।

यहाँ तक कि यीशु ने भी, अपनी सेवा के दौरान, विश्राम करने और प्रार्थना करने के लिए समय निकाला (लूका 5:16)। यह हमें दिखाता है कि अपने लिए समय निकालना - खासकर परमेश्वर से फिर से जुड़ने के लिए - स्वार्थ नहीं, बल्कि समझदारी है। स्वार्थ और अपनी देखभाल करने में फर्क होता है। स्वार्थ दूसरों की अनदेखी करता है, लेकिन अपनी देखभाल हमें दूसरों की बेहतर सेवा करने के लिए तैयार करती है। जब हम आध्यात्मिक रूप से भरे हुए होते हैं, तो हम ज्यादा सच्चे मन से और खुशी-खुशी दे पाते हैं।

मरियम और मार्था की कहानी (लूका 10:38-42) हमें एक जरूरी सबक सिखाती है। जहाँ मार्था सेवा करने में व्यस्त थी, वहीं मरियम ने यीशु के चरणों में बैठने को चुना। यीशु ने मरियम के चुनाव को सही ठहराया, और हमें याद दिलाया कि उसके लिए लगातार काम करते रहने से कहीं ज्यादा जरूरी उनके साथ रहना है।

एक कलीसियाई परिवार के तौर पर, आइए हम ये बातें याद रखें :

- हम खाली प्याले से कुछ नहीं दे सकते।
- हमें हर दिन परमेश्वर की ताकत की जरूरत होती है।
- हमें विश्राम करने और नई ताकत पाने के लिए समय जरूर निकालना चाहिए।

जब हम परमेश्वर को अपने जीवन को भरने देते हैं, तो हम थकावट के कारण नहीं, बल्कि अपनी भरपूरता में से सेवा करना शुरू करते हैं।

आइए आज हम यीशु का निमंत्रण स्वीकार करें: आओ, विश्राम करो, और फिर से भर जाओ।

कैप्टन सीमा फ्रांसिस
कोर कमांडिग ऑफिसर / डी.एस.डब्ल्यू.एम.,
कोलकाता सेंट्रल कोर, पश्चिम बंगाल डिवीजन

अनुभव/गवाही/रिपोर्ट

Ordination, Commissioning and Graduation of Cadets 2026

2026 - कैडेट्स का ऑर्डिनेशन, कमीशनिंग और ग्रेजुएशन

"कीपर्स ऑफ द कवनेंट" सत्र 2024-2026, 14 और 15 मार्च 2026, बरेली सेंट्रल कोर, बरेली

कैडेट्स की वाचा (Covenant) सभा : इस सभा का नेतृत्व लेफ्टिनेंट कर्नल इमैनुएल मसीह ने किया, जिन्होंने **"कीपर्स ऑफ द कवनेंट"** सत्र के कैडेट्स का परिचय कराया। लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा ने विशेष प्रार्थना की। सेवानिवृत्त कमिश्नर सैमुअल चरन ने 1 तीमुथियुस 3:1 पर आधारित कैडेट्स के लिए उत्साहवर्धक शब्द कहे।

इसके बाद, लेफ्टिनेंट कर्नल सुरेश मसीह की प्रार्थना के उपरांत, कमिश्नर वनलालफेला ने बाईबल का प्रभावशाली संदेश दिया; उन्होंने कैडेट्स से आग्रह किया कि वह चुनौतियों के बीच भी विश्वासयोग्य बने रहें और परमेश्वर तथा **'मुक्ति फौज'** के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को बनाए रखें।

इस प्रेरणादायक संदेश को सुनकर, कैडेट्स **'दया-आसन'** पर घुटना नशीन हुए और अपनी **'वाचा'** तथा **'वचनबद्धताओं'** पर हस्ताक्षर किए; इस प्रकार उन्होंने स्वयं को 'मुक्ति फौज' के सिद्धांत के प्रति, और आत्माओं को बचाने, संतों को आत्मिक रूप से विकसित करने तथा पीड़ित मानवता की सेवा करने के आजीवन सेवकाई कार्य के प्रति समर्पित कर दिया।

फिर उसी दिन शाम 6 बजे 'पेजेंट नाइट' (सांस्कृतिक संध्या) का आयोजन हुआ, जिसे अगुवों, ऑफिसरों, प्रशिक्षण महाविद्यालय के कर्मचारियों, कैडेट्स के परिवारों और कोर सदस्यों की एक विशाल मंडली की उपस्थिति में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस कार्यक्रम का नेतृत्व मेजर राजकुमार गिल ने किया, और इसका औपचारिक उद्घाटन कमिशनर वनलालफेला ने किया; उन्होंने रिबन काटकर इस संध्या का शुभारंभ किया।

कैडेट्स ने विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं, जैसे - गीत, नृत्य, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ आदि। इस सभा का समापन चीफ सेक्रेटरी लेफ्टिनेंट कर्नल अब्राहम लिंकन मुड्डा द्वारा की गई प्रार्थना के साथ हुआ।

ऑर्डिनेशन, कमीशनिंग और ग्रेजुएशन : अगले दिन, 15 मार्च 2026 को **"ऑर्डिनेशन और कमिशनिंग की सभा"** आयोजित की गई। इस सभा की अगुवाई चीफ सेक्रेटरी, लेफ्टिनेंट कर्नल अब्राहम लिंकन मुड्डा ने की। ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिंसिपल, लेफ्टिनेंट कर्नल राजकुमार ने **'कीपर्स ऑफ द कवनेंट सत्र'** की संक्षिप्त सत्र-रिपोर्ट प्रस्तुत की। कमिश्नर वनलालफेला ने ऑर्डिनेशन और कमिशनिंग की रस्म अदा की। **'विश्वास की घोषणा' (Declaration of Faith)** के उपरांत, कैडेट्स ने अपने प्रमाण-पत्र और नियुक्तियाँ प्राप्त कीं, और इस प्रकार वह **'लेफ्टिनेंट'** बने। लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा ने विशेष प्रार्थना की। टैरिटोरियल कमांडर ने **'महान आदेश' (Great Commission)** पर एक शक्तिशाली संदेश दिया, जिसमें उन्होंने नए लेफ्टिनेंटों से आग्रह किया कि वह: ***"टूटे हुए दिलों को चंगा करें, अंधेरे में डूबे लोगों तक रोशनी पहुँचाएँ, मसीह के अधिकार के अधीन होकर सेवा करें, और निडर होकर प्रचार करें तथा चेले तैयार करें।"*** कैडेटों के बच्चों को भी प्रशंसा पत्र दिए गए। सभा का समापन सेवानिवृत्त कमिश्नर सैमुअल चरन ने प्रार्थना के साथ किया।

लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा ने माता-पिताओं को **'ऑर्डर ऑफ द सिल्वर स्टार'** प्रदान किया। नए लेफ्टिनेंटों ने अपनी B.Th. की डिग्रियाँ (ATA से मान्यता प्राप्त) कमिश्नर वनलालफेला से प्राप्त कीं, जिसमें ट्रेनिंग प्रिंसिपल ने उनका सहयोग किया। चीफ़ सेक्रेटरी ने एक प्रेरणादायक संदेश साझा किया, जिसका मुख्य विषय था: ***"मन फिराओ, क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है।"***

इस सभा में लगभग 150 सिपाही और साथी उपस्थित थे। समापन गीत के दौरान, कई लोगों ने ***'दया-आसन' (Mercy Seat)*** पर आकर स्वयं को प्रभु को समर्पण किया। टैरिटोरियल कमांडर ने प्रार्थना और आशीष वचन के साथ सभा का समापन किया।

परमेश्वर सभी नए लेफ्टिनेंटों और 'मुक्ति फौज, उत्तरी भारत टैरिटरी' को आशीष दे।

मेजर अनिल मसीह
लिटरेरी ऑफिसर, उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Bible Oratorical Contest
बाईबल ओरेटोरिकल प्रतियोगिता

14 मार्च 2026 को गुरदासपुर डिवीजन के 25 कोर में बाईबल ओरेटोरिकल (Oratorical) प्रतियोगिता बड़े अच्छी तरह से आयोजित की गई। यह कार्यक्रम संबंधित कोर ऑफिसरों की देखरेख और मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस प्रतियोगिता में कुल 192 बच्चों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था - बच्चों को परमेश्वर का वचन सीखने, समझने और आत्मविश्वास के साथ सुनाने के लिए प्रेरित करना।

बच्चों ने दिए गए बाईबल के अंश अत्यंत उत्साह और भक्ति के साथ सुनाए। उन्हें निम्नलिखित पद याद करके सुनाने थे : **भजन संहिता 34:1-10 / मत्ती 5:1-11**

प्रतिभागियों ने इन पदों को बहुत सुंदर और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया, जिससे उनकी समझ, तैयारी और विश्वास झलक रहा था। यह देखकर उत्साह मिला कि सभी कोर के बच्चे बहुत जोश और लगन के साथ भाग ले रहे थे।

उनके प्रयासों में केवल याददाश्त ही नहीं, बल्कि आत्मिक रूप से बढ़ने की इच्छा भी दिखाई दी। कोर अफसरों की उपस्थिति और मार्गदर्शन ने सुनिश्चित किया कि पूरा कार्यक्रम व्यवस्थित और प्रेरणादायक तरीके से सम्पन्न हो।

समग्र रूप से, यह बाईबल ओरेटोरिकल प्रतियोगिता सभी बच्चों के लिए आत्मिक रूप से बढ़ाने वाली और प्रेरित करने वाला अनुभव साबित हुई। हमें खुशी है कि ऐसे कार्यक्रम बच्चों के विश्वास और आध्यात्मिक विकास को मजबूत करते हैं।

मेजर अशोक मसीह
डिवीजनल यूथ सेक्रेटरी, गुरदासपुर डिवीजन

Water and Gender Seminar
जल और लैंगिकता सेमिनार

20 मार्च 2026 को NCCI द्वारा **"जल और लैंगिकता"** विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न विद्वानों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और संगठनों ने भाग लिया।

मुक्ति फौज की ओर से मेजर रूबी रॉबिन, ले. कर्नल सुमित्रा और ले. कर्नल गोल्डी शामिल हुए।

सेमिनार में बताया गया कि : जल संकट और गलत प्रबंधन का सबसे ज़्यादा प्रभाव महिलाओं और गरीब समुदायों पर पड़ता है।

महिलाएँ पानी लाने और घर में जल प्रबंधन की मुख्य जिम्मेदारी निभाती हैं, जिससे शिक्षा और रोजगार के अवसर कम हो जाते हैं।

सुरक्षित स्वच्छता सुविधाओं की कमी से महिलाओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा पर खतरा बढ़ता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण जल उपलब्धता और भी चुनौतीपूर्ण हो रही है, जिसका असर महिलाओं पर अधिक पड़ता है।

सेमिनार में सुझाव दिए गए कि : जल प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए।

समुदाय आधारित जल व्यवस्था बनाई जाए।

जल संबंधी नीतियों में लैंगिक दृष्टिकोण शामिल किया जाए।

यह सेमिनार अत्यंत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक रहा। मैं परमेश्वर और मुक्ति फौज की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर दिया।

काश परमेश्वर मुक्ति फौज को बहुतायत से बरकत दे।

मेजर रूबी
सोशल सेक्रेटरी, उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Ecumenical Participation / एक्युमेनिकल सहभागिता

17 मार्च 2026 को दिल्ली के आर्चबिशप मोस्ट रेव. अनिल जे.टी. कूटो के एपिस्कोपल अभिषेक की रजत जयंती समारोह में मुक्ति फौज टीएचक्यू से चीफ सेक्रेटरी लेफ्टिनेंट कर्नल अब्राहम लिंकन मुद्दा, मेजर गुरचरण मसीह, मेजर अजीत मैसी और मेजर लखबीर मसीह उपस्थित रहे। उनके 25 वर्षों की आत्मिक सेवा, नेतृत्व और समाज में योगदान के सम्मान में यह कार्यक्रम उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ देने के लिए रखा गया था।

कार्यक्रम में धन्यवाद प्रार्थना सभा, प्रेरणादायक संदेश और संगति का समय शामिल था, जिसने आत्मिक समृद्धि और सामुदायिक संबंधों को और मजबूत किया।

इस समारोह में सम्मिलित होना मेरे लिए एक सुअवसर रहा।

मेजर अजीत मैसी

पब्लिक एवं एक्युमेनिकल रिलेशन्स ऑफिसर / इमरजेंसी ऑफिसर
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

My Experience - ICO Session 264

मेरा अनुभव - आई.सी.ओ. सेशन 264, लंदन

1. परिचय : मैं मुक्ति फौज की लीडरशिप का दिल से शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझे **आई.सी.ओ. सेशन 264**, लंदन में 42 दिनों के स्पेशल ट्रेनिंग प्रोग्राम में हिस्सा लेने का मौका दिया। यह ट्रेनिंग प्रोग्राम प्रतिभागियों को मसीही सेवकाई, नेतृत्व विकास और ऑर्गेनाइजेशनल मैनेजमेंट की गहरी जानकारी देने के लिए आयोजित किया गया था। इसका मकसद आत्मिक संरचना को मजबूत करना और समुदायों की असरदार तरीके से सेवा करने की हमारी काबिलियत को बढ़ाना भी था।

ट्रेनिंग ने अनुभवी लीडर्स से सीखने और अलग-अलग परिवेश के प्रतिभागियों के साथ बातचीत करने का एक कीमती मौका दिया। यह रिपोर्ट ट्रेनिंग पीरियड के दौरान मिले ज्ञान, मिले अनुभवों और सीखे गए सबक का विवरण है।

2. ट्रेनिंग प्रोग्राम के मुख्य मकसद थे :

- प्रतिभागियों में नेतृत्व और सेवकाई कौशल को मजबूत करना।
- मसीही धर्मज्ञान और बाईबल की शिक्षाओं की समझ को गहरा करना।
- समुदाय सेवा और मिशन कार्य के लिए असरदार योजना बनाना।
- मसीही इंस्टीट्यूशन में संस्थानात्मक और प्रबंधकीय कौशल को बेहतर बनाना।
- आत्मिक उन्नति और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देना।

3. ट्रेनिंग और सीखने के क्षेत्र : ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान, कई जरूरी विषयों को सिखाया गया। इनमें धर्मज्ञान शिक्षा, नेतृत्व विकास, सामुदायिक जुड़ाव और आत्मिक संरचना शामिल थे।

सेशन ने प्रतिभागियों को मसीही सेवकाई में सेवक नेतृत्व की अहमियत को समझने में मदद की। हमने कलीसिया और समाज सेवा के लिए असरदार वार्तालाप, टीमवर्क और स्ट्रेटेजिक प्लानिंग के बारे में भी सीखा। वर्कशॉप और ग्रुप डिस्कशन ने प्रतिभागियों को अपने अनुभव शेयर करने और एक-दूसरे से सीखने का मौका दिया।

ट्रेनिंग में गरीबी, अन्याय और कम्युनिटी वेलफेयर जैसे सामाजिक मुद्दों को सम्बोधित करने में चर्च की भूमिका पर भी जोर दिया गया। इन सेशन के जरिए, प्रतिभागियों को जरूरतमंद लोगों की सेवा करने के व्यावहारिक तरीकों के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

4. ट्रेनिंग के दौरान अनुभव : आई.सी.ओ. में ट्रेनिंग अनुभव समृद्ध और उत्साहित करने वाला था। मुझे दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के ट्रेनर्स और साथी प्रतिभागियों के साथ बातचीत करने का मौका मिला। इन चर्चाओं से मुझे यह समझने में मदद मिली कि अलग-अलग संस्कृतियों और सामाजिक परिवेशों में मसीही सेवकाई कैसे की जाती है। हमें यूनाइटेड किंगडम में मुक्ति फौज की मिनिस्ट्री और सोशल सर्विस को देखने का भी मौका मिला। अलग-अलग सेंटर्स पर जाने और कर्मचारियों से बातचीत करने से आत्मिक और सामाजिक आउटरीच, दोनों तरह से समुदाय की सेवा करने के उनके समर्पण के बारे में कीमती जानकारी मिली।

एकेडमिक सेशन के अलावा, ट्रेनिंग में प्रार्थना, आराधना और साथ में समय बिताना भी शामिल था। इन गतिविधियों ने आत्मिक माहौल को मजबूत किया और प्रतिभागियों को परमेश्वर की सेवा के प्रति अपने विश्वास और समर्पण में बढ़ने को बढ़ावा दिया।

5. सीखी गई खास बातें : ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान कई जरूरी बातें सीखीं। सबसे पहले, मैंने सीखा कि असरदार मसीही नेतृत्व के लिए विनम्रता, लगन और एक सेवक जैसा दिल होना जरूरी है। एक अगुवा को दूसरों को प्यार, समझदारी और जिम्मेदारी से मार्गदर्शन करना चाहिए।

दूसरा, सफल सेवकाई के लिए टीमवर्क और सहयोग जरूरी है। जब लोग एक जैसे दर्शन और मकसद के साथ मिलकर काम करते हैं, तो चर्च का मिशन और मजबूत होता है।

तीसरा, चर्च की न सिर्फ आत्मिक मामलों में बल्कि सामाजिक चुनौतियों को सुलझाने और कमजोर समुदायों की मदद करने में भी अहम भूमिका है।

6. सीख का इस्तेमाल : इस ट्रेनिंग से मिला ज्ञान और अनुभव मेरी सेवकाई और जिम्मेदारियों में बहुत मददगार होगा। मैं सीखे गए सबक को कई तरीकों से इस्तेमाल करने की योजना बना रही हूँ।

मैं मुक्ति फौज के भीतर लीडरशिप और टीमवर्क को मजबूत करने के लिए काम करूँगी। मुझे कोर और समुदाय में शैक्षणिक और आत्मिक कार्यक्रम को बेहतर बनाने की भी उम्मीद है। ट्रेनिंग ने मुझे और ज्यादा समुदाय आउटरीच गतिविधियों को बढ़ावा देने और उन लोगों का सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया है जो समाज और आर्थिक मुश्किलों का सामना कर रहे हैं।

इसके अलावा, मेरा इरादा पाए हुए ज्ञान को अपने साथियों और साथी कर्मचारियों के साथ शेयर करने का है ताकि हम सब मिलकर मुक्ति फौज के मिशन में और असरदार तरीके से योगदान दे सकें।

7. चुनौतियों का सामना करना पड़ा : ट्रेनिंग पीरियड के दौरान, कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे एक अलग कल्चरल माहौल में खुद को ढालना करना और एक व्यस्त और गहन ट्रेनिंग समय सारणी के हिसाब से ढलना। हालाँकि, ट्रेनर्स और साथी प्रतिभागियों के सहयोग से मैं इन चुनौतियों को दूर कर पाई, और वे कीमती अनुभव का हिस्सा बन गए।

8. निष्कर्ष : आई.सी.ओ. में 42-दिन का ट्रेनिंग प्रोग्राम एक बहुत ही मायने रखने वाला और फायदेमंद अनुभव था। इसने मुझे आत्मिकता, बद्धिमानी और पेशेवर उन्नति करने में मदद की। ट्रेनिंग ने मसीही सेवकाई और नेतृत्व के बारे में मेरी समझ को मजबूत किया है।

मुझे यह मौका देने के लिए मैं मुक्ति फौज की लीडरशिप की बेहद शुक्रगुजार हूँ। मैं इस दौरान मिले ज्ञान और कौशलों को इस्तेमाल करने के लिए समर्पित हूँ।

यह मुक्ति फौज के विकास और परमेश्वर के लोगों की सेवा के लिए एक प्रशिक्षण है।

मेजर जीन कैथलीन लिम्मा

कोर कमांडिंग ऑफिसर, अंडमान एक्सटेंशन

Junior Home League Meeting

जूनियर होमलीग सभा

25 मार्च 2026 को हमारी पड्डा कोर में जूनियर होमलीग की विशेष सभा आयोजित की गई। इस सभा में कई नौजवान बेटियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभा का संचालन बेटी काजल ने किया।

इसके बाद मेजर कुलदीप सरोज ने नीतिवचन 3:1-5 पर आधारित परमेश्वर का वचन पेश किया।

उन्होंने बताया कि :

- हमें अपने माता-पिता की शिक्षा और मार्गदर्शन को कभी नहीं भूलना चाहिए।
- माता-पिता हमेशा हमारे भले के लिए सोचते हैं, इसलिए उनकी आज्ञा मानना हमारे लिए आशीष का मार्ग है।

- परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं और उसके वचन को अपने हृदय रूपी पट्टों पर अंकित कर लें, ताकि हमारा जीवन सही दिशा में चलता रहे।
- जब हम परमेश्वर और अपने माता-पिता की शिक्षा का सम्मान करते हैं, तब परमेश्वर हमारे जीवन से प्रसन्न होता है।

सभा में उपस्थित सभी नौजवान बेटियों ने ध्यानपूर्वक परमेश्वर का वचन सुना और अपने जीवन, भविष्य और आध्यात्मिक विकास के लिए प्रार्थना की।

परमेश्वर ने इस सभा के माध्यम से हमारी कोर और सभी बहनों को बहुत आशीष दी।

मेजर कुलदीप सरोज

पड्डा कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन

Youth Meeting
नौजवानों की सभा

18 मार्च 2026 को हमारी कोर खुशहालपुर में नौजवानों की विशेष सभा आयोजित की गई। इस सभा में कुल 38 नौजवानों ने भाग लिया। सभा का संचालन हमारे आदरणीय डी.वाई.एस., मेजर बलविंदर द्वारा किया गया।

सभा की शुरुआत प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद नीतिवचन 3:1-10 का पाठ भाई रोहित ने किया। इसके बाद मेजर बलविंदर ने परमेश्वर का सामर्थी वचन पेश किया।

अपने संदेश में उन्होंने बताया कि :

- हमें अपनी नौजवानी के दिनों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिताना चाहिए।
- युवावस्था जीवन का महत्वपूर्ण समय है, जहाँ लिए गए निर्णय भविष्य को प्रभावित करते हैं।
- परमेश्वर का वचन हमारा मार्गदर्शक है, इसलिए हमें उसी के अनुसार चलना चाहिए।

उन्होंने उड़ाऊ पुत्र का उदाहरण देते हुए समझाया कि :

- उसने अपने पिता और परमेश्वर दोनों को छोड़कर गलत रास्तों पर जीवन बिताया।
- बुरे मित्रों और बुरी आदतों ने उसका जीवन नष्ट कर दिया।
- जब उसके पास कुछ नहीं बचा, तो सभी मित्र उसे छोड़कर चले गए।
- अकेलेपन में उसे अपने पापों का एहसास हुआ और वह अपने पिता के पास लौट गया, क्षमा माँगी और नया जीवन शुरू किया।

मेजर साहिब ने युवाओं को प्रेरित किया कि हम भी अपने जीवन पर ध्यान दें, गलत रास्तों से लौट आएँ और परमेश्वर के पास आएँ, क्योंकि परमेश्वर हमें क्षमा करने और संभालने के लिए सदैव तैयार रहता है।

अंतिम प्रार्थना और आशीष वचन के साथ सभा का समापन किया गया।

मेजर रिंकू

खुशहालपुर कोर, डेरा बाबा नानक

Bible Oratorical Contest - Corps Level
बाईबल भाषण प्रतियोगिता - कोर स्तर पर

प्रभु यीशु मसीह के मधुर और मीठे नाम में आप सभी को मेरा सलाम। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि दिनाँक 14 मार्च 2026 को जागावाल बंदीयाँ कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन में बाईबल भाषण प्रतियोगिता (**Bible Oratorical Contest)** का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। इस विशेष कार्यक्रम की अगुवाई मेजर बलविन्दर मसीह, डी.वाई.एस. के द्वारा की गई। इस कार्यक्रम का आयोजन कैप्टन विक्टर मसीह, कोर कमांडिग ऑफिसर के द्वारा किया गया। जिन्होंने पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था बहुत अच्छी तरह से की।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्धेश्य युवाओं और बच्चों के बाईबल के वचनों को समझने, याद करने और साहस के साथ लोगों के सामने प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करना था। सभी बच्चों और युवाओं ने पूरे उत्साह, आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर के वचन पर अपने विचार साझा किये। उनकी प्रस्तूतियाँ सुनकर उपस्थित दूसरे सभी बच्चों और युवाओं को बहुत आत्मिक आशिष और प्रेरणा मिली।

इस कार्यक्रम में निर्णायक मेजर साहिब ने प्रतिभागियों के संदेश, प्रस्तुति शैली, आत्म विश्वास और बाईबल की समझ के आधार पर उनका मूल्यांकन किया। सभी प्रतिभागियों ने अच्छा प्रदर्शन किया और परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी लगन दिखाई।

कार्यक्रम का वातावरण बहुत ही आशिषि, प्रेरणादायक और उत्साह से भरा हुआ था। अंत में विजेताओं की घोषणा की गई और सभी प्रतिभगियों को सराहना और प्रोत्साहन के साथ इनाम भी दिये गये। इस कार्यक्रम में तकरीबन 25 बच्चों और युवाओं ने भाग लिया और परमेश्वर के वचनों को जो दिये गये थे। (भजन संहिता 34:1-11, मत्ती 5:1-10, नीतिवचन 22:6) अच्छे से सम्पर्ण किया और अपने विचार साझा किये।

मेजर बलविन्दर मसीह, डी.वाई.एस. के द्वारा बहुत अच्छे तरीके से बच्चों और युवाओं की अगुवाई की गई। अंत में उन्होंने कोर के और भाग लिये हुये सभी बच्चों के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर का धन्यवाद किया गया कि उन्होंने इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक सम्पन्न होने किया और सभी उपस्थित लोगों को बच्चों और युवाओ को आत्मिक रूप से आशिषित किया। परमेश्वर हमारी कोर के सभी बच्चों और युवाओं को, हमारे अगओं को और मुक्ति फौज को बरकत दे। 'आमीन'

कैप्टन विक्टर मसीह

कोर कमांडिग ऑफिसर,

जोगोवाल बेदियाँ कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन

मुक्ति फ़ौज

उत्तरी भारत टैरिटरी का अधिकारिक अंग

RNI Regd. No. 27158/75

विलियम और कैथरीन बूथ : संस्थापक

लिंडन बकिंघम : जनरल

अन्तर्राष्ट्रीय हेडक्वार्टर्स

101, क्वीन विक्टोरिया स्ट्रीट,

लंदन EC4V 4EH, यू.के.

वनललफेला : *प्रकाशक*

वनललफेला : *टैरिटोरियल कमांडर*

अमरीक मसीह : *संपादक*

मैसी आर्ट प्रेस : प्रिंटिंग प्रेस

मुक्ति समाचार मासिक प्रकाशित होता है।

एक कॉपी रु. 12.00

वार्षिक अंशदान भारतीय **रु. 144.00**

मुक्ति फ़ौज, उत्तरी भारत टैरिटरी,

नई दिल्ली के पक्ष में मनीआर्डर या डिमांड ड्राफ्ट

डाक का पता : **मुक्ति फ़ौज**

उत्तरी भारत टैरिटरी, टैरिटोरियल हेडक्वार्टर्स

एच-15 ग्रीन पार्क एक्सटेंशन,

नई दिल्ली-110016, भारत

फ़ोन : +91-11-26167764

+91-11-26167763

ईमेल : int.mail@int.salvationarmy.org

int.editor@int.salvationarmy.org

बेबसाइट : www.salvationarmy.org@ind

हमारा उद्देश्य :

मुक्ति फौज एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है जो मसीही चर्च का एक अभिन्न अंग है, जिसकी आत्मिक प्रेरणा एक सुसमाचार, सामाजिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य सेवकाई में व्यावहारिक अनुप्रयोग है।

इसका लक्ष्य सभी लोगों को पवित्र-शास्त्र के माध्यम से खोजें गए और दूसरों के साथ शांति और सद्भावना में पवित्र जीवन द्वारा प्रदर्शित जीवित मसीह के साथ संबंधों में जीवन की पूर्णता प्राप्त करने में मदद करता है।

CADETS COMMISSIONING 'KEEPERS OF THE COVENANT' AT BAREILLY CENTRAL CORPS

ECUMENICAL FELLOWSHIP WITH ARCHBISHOP OF DELHI DIOCESE

MAJOR JEAN LIMMA,
ATTENDED ICO SESSION - 264

WATER & GENDER SEMINAR ORGANISED BY NCCI IN DELHI,
PARTICIPATION BY THE SALVATION ARMY OFFICERS

PALM SUNDAY MEETING
AT BHADURA CORPS, WEST BENGAL DIVISION

PALM SUNDAY MEETING
AT GUJJA PEER CORPS, DERA BABA NANAK DIVISION

PALM SUNDAY MEETING
AT PAKKHO KE TAHLI SAHAB CORPS, DERA BABA NANAK DIVISION

संस्थापिक : विलियम बूथ, *संपादक :* अमरीक मसीह

जनरल : लिंडन बकिंघम, 101 क्वीन विक्टोरिया स्ट्रीट, लन्दन
मुद्रित : मुक्ति फौज, उत्तरी भारत टेरिटरी, एच-15, ग्रीन पार्क एक्स., नई दिल्ली-110016
मुद्रक : मैसी आर्ट प्रेस, आर.जेड. 317/20, तुगलकाबाद एक्स., नई दिल्ली-110019

प्रकाशक : वनललफेला
आर.एन.आई. पंजीकृत सं. : 27158/75

प्रकाशित : वनललफेला